अब केता कहूं तुमकों जाहेर, ए अर्थ प्रगट कह्यो न जाए।
निघात डारे छोड़ लज्या अहंकार, नेहेचल सुख दीजे रे ताए।। १९ ।।

हे वैष्णवो! और इससे अधिक तुम्हें क्या स्पष्ट कहूं? इससे अधिक स्पष्ट कहना सम्भव नहीं है। जो वैष्णव अपने अहंकार और लोक-लाज को छोड़कर समर्पित हो जाए उसे यह अखण्ड सुख मिल सकता है।

ए प्रकास विचार तुम देख्या नाहीं, तुम वैभवें लगे रे विलास।
अब महामत कहे जोत उद्दोत भई, ताको इत आए देखो रे उजास।। २० ।।

तुमने इन ज्ञान के वचनों को देखा ही नहीं। तुम तो वैभव और विलास में मग्न हो गए। श्री महामतिजी कहते हैं कि अब यह ज्ञान जाहिर हो गया है। उस ज्ञान के प्रकाश को हमारे पास आकर समझ लो।

॥ प्रकरण ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ १४९ ॥

राग सोरठ

धनी न जाए किनको धूत्यो, जो कीजे अनेक धुतार।
तुम चैन ऊपर के कई करो, पर छूटे न क्यों ए विकार।। १ ।।

चाहे कितने ही ढोंग रच लो उस पारब्रह्म (धनी) को धोखा नहीं दे सकते। तुम ऊपर के कितने ही दिखावे करो, परन्तु अन्दर के संशय नहीं मिट सकते।

कोई बढ़ाओ कोई मुड़ाओ, कोई खैंच काढ़ो केस।
जोलों आतम न ओलखी, कहा होए धरे बहु भेस।। २ ।।

चाहे बालों को बढ़ाओ, चाहे मुडा दो अथवा जैन मुनियों की तरह बाल खींच-खींचकर निकालो, परन्तु जब तक आत्मा को (अपनी) पहचान नहीं हो जाती, तरह-तरह के रूप धारण करने से क्या मिलेगा?

चार बेर चौका देओ, लकड़ी जलाओ धोए जल।
अपरस करो बाहेर अंग को, पर मन ना होए निरमल।। ३ ।।

चार बार चौका लगाओ और लकड़ी को भी धोकर जलाओ। अपने अंगों की भी बाहर से सफाई करो, परन्तु इतना करने से मन निर्मल नहीं होगा।

सात बेर अस्नान करो, पेहेनो ऊंन उत्तम कामल।
उपजो उत्तम जात में, पर जीवड़ा न छोड़े बल।। ४ ।।

सात बार स्नान करो और उत्तम ऊन के कपड़े पहनो। उत्तम जाति में जन्म लो, परन्तु जीव निर्मल नहीं होता।

सौ माला वाओ गले में, द्वादस करो दस बेर।
जोलों प्रेम न उपजे पिउ सों, तोलों मन न छोड़े फेर।। ५ ।।

गले में सौ माला पहनो। दस बार द्वादशी का भण्डारा कर भोजन करो। जब तक धनी से प्रेम नहीं होगा, तब तक यह मन माया को नहीं छोड़ेगा।

तान मान कई रंग करो, अलापी करो किरंतन।
आप रीझो औरों रिझाओ, पर बस न होए क्यों ए मन।। ६ ।।

चाहे ऊंचे-ऊंचे मधुर स्वरों में अलाप करके कीर्तन करो जिससे स्वयं भी आनन्दित होओ और दूसरों को भी आनन्दित करो, फिर भी मन वश में नहीं होता।

Nijanand App

उच्छव करो अंनकूट का, विविध करो प्रसाद।
पर निकट न आवें नाथ जी, पीछे सब मिल करो स्वाद।।७ ।।

अन्नकूट के उत्सव में तरह-तरह के भोजन बनाओ, परन्तु इससे श्री कृष्णजी नहीं मिलते। पीछे तुम्हीं सब मिल करके उन भोजनों को खाते हो।

सीखो सबे संस्कृत, और पढ़ो सो वेद पुरान।
अर्थ करो द्वादस के, पर आप न होए पेहेचान।।८ ।।

सब लोग संस्कृत पढ़कर वेद पुराणों को पढ़ लो और बारह मात्राओं के अर्थ सन्धि विग्रह में (सन्धि खोलने में) बारह तरह के कर डालो, परन्तु पारब्रह्म की पहचान नहीं होती।

साधो सबे जोगारंभ, अनहद अजपा आसन।
उड़ो गड़ो चढ़ो पांच में, आखिर सुन्य न छोड़ी किन।।९ ।।

योग की सभी क्रियाओं को भले ही साध लो। आसन, प्राणायाम से अनहद और अजपा ध्वनि को भले ही सुन लो, परन्तु इसी पांच तत्व के ब्रह्माण्ड में ही भटकना पड़ेगा। शून्य निराकार को उलंघ कर कोई आगे नहीं जा सका।

आगम भाखो मन की परखो, सूझे चौदे भवन।
मृतक को जीवत करो, पर घर की न होवे गम।।१० ।।

मन को परखने वाले पारखी बनकर भविष्य की बातें बताओ, चौदह लोकों की हकीकत बताओ, मरे को जिन्दा कर दो, परन्तु घर की पहचान नहीं होगी।

सतगुर सोई जो आप चिन्हावे, माया धनी और घर।
सब चीन्ह परे आखिर की, ज्यों भूलिए नहीं अवसर।।११ ।।

सतगुरु वही है जो अपनी, माया की, अपने धनी की और घर की पहचान बताए और महाप्रलय की हकीकत बताए, इसलिए ऐसे सतगुरु को पाने के लिए समय नहीं गंवाना चाहिए।

ए पेहेचाने सुख उपजे, सनमंध धनी अंकूर।
महामत सो गुर कीजिए, जो यों बरसावे नूर।।१२ ।।

ऐसे सतगुरु की पहचान हो जाने पर अपनी निसबत और धनी की पहचान हो जाने से सुख मिलता है। इसलिए श्री महामतिजी कहते हैं कि गुरु उसी को बनाना चाहिए जो इस तरह का ज्ञान बताए।

॥ प्रकरण ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ १६१ ॥

राग श्री

पतित सिरोमन यों कहे।
जो मैं किए हैं बज्रलेप, मेरे साहेब सों द्वेष।।टेक।। १ ।।

पतितों में मैं शिरोमणि (मुख्य) हूं, क्योंकि मैंने अपने धनी से द्वेष बढ़ाकर बज्रलेप जैसा गुनाह किया है।

पतित मेरे आगे कौन कहावे, मैं कोई न देख्या रे पतीत।
ए सब कोई साध चलत हैं सीधे, जो देखिए अपनी रीत।।२ ।।

मुझसे अधिक पतित और कौन हो सकता है, क्योंकि मैंने अपने से पतित तो किसी को देखा ही नहीं। यह सब साधु अपने नियम और रीति के अनुसार सीधे रास्ते पर चलते हैं।

Nijanand App